आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2018
वर्ष 4, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2018, पृ. 48–51

महिला एवं विकासः अवधारणात्मक परिवर्तन

छाया*

विगत वर्षों में विकास कार्यक्रमों की इस बात को लेकर आलोचना होती रही है कि उनमें लिंग भूमिकाओं (Gender role) तथा इनके वैश्वीकृत दक्षिणीय भाग में महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों की उपेक्षा की जाती रही है। यद्यपि गरीबी उन्मूलन और निम्न सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति में सुधार हेतु चलाये जाने वाले विकास कार्यक्रमों में महिलाओं का एकीकरण करने के प्रयास में एक अवधारणात्मक परिवर्तन स्पष्ट रुप से दिखाई पड़ता है। इस सन्दर्भ में छः अवधारणात्मक उपागम चिन्हित किये गये हैः (1) कल्याणकारी उपागम (Welfare approach); (2) विकास में महिलाएं (Women in Development); (3) महिला एवं विकास (Women and Development); (4) लिंग एवं विकास (Gender and Development); (5) प्रभावशील उपागम (The effectiveness approach); तथा (6) मुख्यधारा विषयक लैंगिक समानता (Mainstream gender equility)। प्रस्तुत शोध पत्र में इन सभी अवधारणात्मक उपागमों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

वर्ष 1972 में ऐन ओकले ने 'सैक्स' तथा 'जेन्डर' शब्द में अन्तर करने में सफलता प्राप्त की। वास्तव में इनका समानार्थी अथवा पर्यायवाची के रुप में प्रयोग किया जाता रहा है। जहाँ 'जेन्डर' का सम्बन्ध पुरुषत्व तथा स्त्रीत्व पर आधारित किसी व्यक्ति की 'सैक्सुलिटी' से है वहीं सैक्स (लिंग) का सम्बन्ध किसी व्यक्ति की दैहिक संरचना के जैवकीय गुणों से है। 'जेन्डर' शब्द की लोकप्रियता व अधिकाधिक प्रयोग के साथ इसके वास्तविक अर्थ का दुरुपयोग भी किया जाने लगा। उदाहरण के लिए अधिकतर विकास अभिकरण तथा गैर सरकारी संगठन प्रायः इसका प्रयोग प्रमुख रुप से महिला विषयक मुद्दों की चर्चा में करते रहे हैं। वर्तमान में इसकी लोकप्रियता में अधिक वृद्धि हुई है तथा इसका प्रयोग राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरण तथा स्वास्थ्य जैसे व्यापक क्षेत्रों में भी किया जाने लगा है।

1. कल्याणकारी उपागम

सामाजिक सभ्यता अथवा "कल्याणकारी उपागम" का प्रादुर्भाव 1950 से 1970 के दशकों में अधिकतर अफ्रीकी की और एशियाई देशों के उपनिवेशवाद की समाप्ति तथा राजनीतिक संक्रमण काल में हुआ था। कल्याणकारी उपागम इन नये स्वतन्त्र देशों मे से प्रत्येक में स्थानीय अभिजनों तथा

*शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ– 250 004 उ. प्र.।

सामान्य जन के बीच असमानताओं के परिणाम का प्रत्युत्तर थी। अधिकतर अर्न्तराष्ट्रीय अभिकरणों ने उन राष्ट्रों के विकास हेतु सहायता एवं एक पश्चिमी उपागम प्रयोग किया जिनमें से आधुनिकीकरण सिद्धान्त तथा माल्थसवादी (जनसंख्या प्रति संसाधन) सिद्धान्त प्रमुख हैं। परन्तु इन सिन्द्धातों से प्रभावित विकास नीतियों ने इन विकासशील देशों में नकारात्मक परिणाम उत्पन्न किये तथा इन देशों की प्रगति में और अधिक बाधा पहुंचायी तथा इस उपागम में महिलाओं के विकास हितों की पूर्ण रुप से उपेक्षा की गयी।

2. विकास में महिलाएं (WID) उपागम

इस उपागम की उत्पत्ति के पीछे तीन बड़े नारीवादी आन्दोलन/लहरें हैं जिनका सम्बन्ध समाज में नारी की दशाओं से रहा है। इनमें से पहली लहर को महिला मताधिकार आन्दोलन के नाम से भी जाना जाता है जिसका जन्म 19वीं शताब्दी के अन्त में उस समय हुआ जब महिलाओं ने समान मताधिकार के लिए संघर्ष तथा राजनीति में सहभागिता के लिए संघर्ष किया। नारीवाद की दूसरी लहर का जन्म उस समय हुआ जब महिलाओं द्वारा सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्याप्त उन असमानताओं, जैसे–लैंगिक हिंसा (Sexual violence), प्रजनन अधिकारों (Sexual rights), लिंग–भेद (Sex discrimination) तथा ग्लास सिलिंग[1] (Glass ceiling), का हल खोजने का प्रयास किया गया, जिसका उन्हें रोजमर्रा की जिन्दगी में सामना करना पड़ता है। यह दूसरी लहर बहुत ही विवादास्पद रही है। यद्यपि यह महिला आन्दोलन इतना अधिक प्रभावी था कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1975 में प्रथम विश्व महिला सम्मेलन का मैक्सिको में आयोजन किया। इस सम्मेलन में महिलाओं के अधिकारों का समर्थन करने व लिंग असमानताओं की समस्या पर गम्भीरता से विचार किया गया। तीसरी महत्वपूर्ण लहर का उद्भव ईस्टर बोजेरप (1970) द्वारा प्रकाशित पुस्तक "वुमेन्स रोल इन इकॉनोमिक डवलपमेन्ट" से हुआ। इस पुस्तक से उत्तरीय विकास अभिकरणों व मानवीय संगठनों को गहरा झटका लगा। बोजेरप ने अनुभवाश्रित तथ्यों के आधार पर यह बताया कि किस प्रकार से विकासशील देशों में विकास के नाम पर विभाजन महिलाओं के कार्य के मूल्य तथा प्रस्थिति को कमतर आंकता है अथवा इसकी उपेक्षा करता है। यह इस बात की व्याख्या करता है कि महिलाओं को सामाजिक तथा आर्थिक लाभों में पुरुषों के मध्य समान भाग प्राप्त करने से क्यों वंचित किया जा रहा है। बोजेरप की इस पुस्तक ने महिलाओं को विकास उपागम में अधिक दृष्टिगोचर होने तथा महिलाओं के विकास में उन्हें एक विशेष श्रेणी की तरह देखे जाने को प्रभावित किया। 1973 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने एक बिल पारित किया। जिसके अनुसार यूनाइटेड स्टेट एजेन्सी फॉर इन्टरनेशनल डवलपमेन्ट (USAID) ने विदेशी सहायता प्राप्त करते समय विकास कायक्रमों में महिला सम्बन्धी गतिविधियों को एकीकृत करने का प्रावधान रखा गया। डबल्यू. आई. डी. उपागम महिलाओं की श्रम शक्ति में महिलाओं को जोड़ने तथा उनके जीवन को सुधारने के लिए उनकी उत्पादक क्षमता में वृद्धि करने को आश्वस्त करता है। यद्यपि कुछ विद्वान इस उपागम की आलोचना करते हुए इसको पश्चिमी समाज से अधिक प्रभावित मानते है। क्योंकि यह दृष्टिकोण दक्षिणी विश्व के बारे में उत्तरी विश्व के बोध का प्रतिनिधित्व करता है तथा यह विकासशील देशों में महिलाओं के सामूहिक व सांस्कृतिक सारोकारों को समझने में असफल रहा है। इस उपागम को महिलाओं के लिए बोझिल मान लिया गया है क्योंकि यह प्रमुख रुप से सार्वजनिक क्षेत्र के सारोकारों पर अधिक केन्द्रित है तथा उनके निजी जीवन की गत्यामकता को समझने में पूर्णतया असफल है।

3. महिला एवं विकास (WAD) उपागम

इस उपागम का जन्म 1975 में मैक्सिको शहर में उस समय हुआ था जब वहाँ महिलाओं से सम्बन्धित मुद्दों को नव–मार्क्सवादी तथा निर्भरता सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया गया। इसका केन्द्र बिन्दु महिलाओं तथा पूंजीवादी विकास के मध्य सम्बन्ध की उनके शोषण में योगदान करने वाली भौतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में व्याख्या करना था। कई बार 'महिला और विकास' की 'विकास मे महिलाएं' परिप्रेक्ष्य के रुप में गलत व्याख्या की जाती है जबकि ये दो अलग–अलग परिप्रेक्ष्य है। जबकि 'विकास और महिलाएं' इस अर्थ में अलग है कि यह विशेष रुप से अपना ध्यान पितृसत्तामकता तथा पूंजीवाद के मध्य सम्बन्ध पर केन्द्रित करता है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार महिलाएं सदैव आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सहभागिता व योगदान करती है चाहे वह सार्वजनिक रुप से हो अथवा निजी जीवन के दायरे में हो।

4. जेन्डर तथा विकास (GAD) उपागम

इस उपागम का विकास 1980 के दशक में समाजवादी नारीवाद (Socialist feminism) के द्वारा किया गया। इसका प्रयोग एक संक्रमण कालीन बिन्दु की तरह से किया गया जिसमें नारीवादी विकास को समझना चाहते थे। इसने विकास की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक यथार्थता के व्यापक मूल्यांकन का कार्य किया। इसका उद्भव पहले ही 'डवलपमेन्ट अल्टरनेटिव्स विद वीमेन फॉर ए न्यू ईरा' (DAWD) नेटवर्क की पहल से 1984 में भारत में हो चुका था। 1986 में इस संगठन ने अपना पहला महिला सम्मेलन नैरोबी में किया। इस सम्मेलन में दक्षिणी भूभाग के नारीवादी अनुसंधान कर्त्ता और एक्टिविस्ट एकत्रित हुए जिनकी अपना एक समान दृष्टिकोण था। उन्होंनें एक मसौदा तैयार किया तथा अनेकों कार्यशालाओं का आयोजन किया। इस संगठन ने पिछले तीन दशकों में चार परस्पर सम्बन्धित विश्व संकटों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए भुखमरी, कर्ज, सेनावाद तथा साम्प्रदायिकता का अध्ययन किया तथा विकासशील देशों की गरीब महिलाओं पर इसके प्रभावों की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की। वर्तमान में इस संगठन के चार प्रमुख लक्ष्य व गतिविधियां है (1) वैश्वीकरण की राजनीतिक आर्थिकी (PEG) (2) लैंगिक तथा प्रजनात्मक स्वास्थ्य और अधिकार (SRHR) (3) राजनीतिक पुर्नरचना और सामाजिक रुपांतरण (PRST) (4) राजनीतिक परिस्थितिकी तथा संवहनता (PEAS)। जेन्डर उपागम न केवल पुरुष व स्त्रियों में लैंगिक आधार पर जैवकीय असमानताओं पर ध्यान केन्द्रित करता है अपितु इस बात पर भी बल देता है कि किस प्रकार से सामाजिक भूमिकाएं, प्रजनन भूमिकाएं तथा आर्थिक भूमिकाएं पुरुषवाद व नारीवाद की जेन्डर असमानताओं से सम्बन्धित है।

5. प्रभाववादी उपागम

इस उपागम का उद्भव भी 1984 के दशक में ही हुआ था। इसके विचार मूलतः 'विकास में महिलाएं' की अवधारणा के इर्द–गिर्द ही जुडें है जिसका सम्बन्ध इस बात से है कि कैसे महिलाएं समाज में व्याप्त असमानताओं का सामना करती है तथा किस प्रकार समाज आर्थिक विकास में महिलाओं के प्रभाव को ज्ञापित करने में असफल रहा है। इस प्रकार से यह न केवल महिलाओं को विकास परियोजनाओं में सम्मिलित करने का प्रयास करता है अपितु उनकी उत्पादकता के स्तर तथा श्रम बाजार में उनकी प्रभावशीलता को भी सुदृढ़ करता है। इसके लिए यह अधिसंरचनाओं तथा

उपकरणों के विकास पर बल देता है जो कि महिलाओं की आमदनी तथा उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक है (विशेष रुप से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं में)।

6. मुख्यधारा विषयक लैंगिक समानता (MGE) उपागम

यह उपागम महिलाओं को लक्ष्य में रखते हुए एक नये विकासवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करताहै। 'जेन्डर मेनस्ट्रीमिंग' इस बात के लिए आश्वस्त करती है कि सभी जेन्डर मुद्दों पर विचार किया जाये तथा इन्हें समाज में सभी स्तरों पर एकीकृत किया जाये। इसका उद्भव 1995 में चतुर्थ 'संयुक्त राष्ट्र महिला सम्मेलन बिजिंग (चीन) में हुआ था। इस मंच पर 189 राज्यों के प्रतिनिधि इस बात पर सहमत हुए थे कि राष्ट्रीय आर्थिक वृद्धि तथा विकास में सफलता तथा प्रगति करने का एक ही मार्ग है कि प्रत्येक विकास परियोजना में पुरुषों व महिलाओं दोनों की समान रुप से सहभागिता हो। इसके साथ ही कई विकास अभिकरणों ने 'विकास में महिलाएं' उपागम को त्याग कर इस नवीन उपागम को अपनाने पर बल देना प्रारम्भ किया है। अतः वर्तमान में विकास सम्बन्धी आंकड़ों (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार) के संकलन व उन पर आधारित रिपोर्टों के प्रकाशन में स्त्री व पुरुष दोनों से संबधित आंकड़ों को स्थान दिया जाने लगा है।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि विकास के संदर्भ में जहाँ पहले महिलाओं की भूमिका की उपेक्षा की गई थी वहीं उनके विकास में योगदान को लेकर कई तरह के उपागम कालान्तर में विकसित हुए। समय के साथ–साथ उनकी समीक्षा भी की जाती रही। कहीं–कहीं यह अति नारीवाद का भी शिकार होती प्रतीत होती है। परन्तु इस दिशा में 'जेन्डर तथा विकास' व 'मुख्यधारा विषयक लैंगिक समानता' के प्रमुख उपागम है जिन्हें सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी ये उपागम अध्ययन करने के लिए अत्यधिक उपयोगी कहे जा सकते है।

टिप्पणी

[1] *A ceiling based on attitudinal or organizational bias in the work force that prevents minorities and women from advancing to leadership positions.*

संदर्भ ग्रन्थ सूची

बोजेरप, ईस्टर 1970: *वीमेन्स रोल इन इकोनोमिक डवलपमेन्ट,* न्यूयार्क, सेंट मार्टिन्स प्रेस।
ओकले, एन रोजामंड 1972: *सेक्स, जेन्डर एण्ड सोसायटी,* एल्डर शॉट एरेना व न्यू सोसायटी।
http://cnzcollins,wordpress.com/2013/03/19/the-wid-wad-gad.app
http://www.wikigender.org/wiki/development.alternative-with-women-for-a-new-era-dawn/